Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2019 SHISRRJ | Volume 2 | Issue 4 | ISSN : 2581- 6306

रमानंद रेणु आ हुनक साहित्य

विनीत कुमार लाल दास
एम.ए. (मैथिली), स्वर्ण पदक प्राप्त, नेट, पटना विश्वविद्यालय, पटना
शोधार्थी मैथिली विभाग ति. माँ भागलपुर विश्वविद्यालय, भागापुर

जखन कोनो रचनाकार मोनमे कोनो बातकेँ ल क तीव्र वेदनाक संग उथल-पुथल होइत रहैत छैक, तखन ओहि क्षण ओहि व्यक्तिकेँ होइत रहैत छैक जे कखन आ कोना ई मानसिक वेदना जल्दीसँ-जल्दी दूर भ जाय। एहि क्षणिक मानसिक वेदनासँ त्राण पयबाक लेल बुद्धिजीवी लोकनि एक टा युक्ति निकालने छथि जे बैचारिक उथल-पुथल मचल अछि तकरा वा त कोनो व्यक्तिसँ साझा क देल जाय। तखन एहि क्षणसँ उबरल जा सकैत अछि। तखन एहि प्रकारक वेदनासँ पीड़ित लोक अपन-अपन बातकेँ लोकसँ साझा करय लगलाह मुदा हुनका लोकनिकेँ ई भान भेलन्हि जे महत्वपूर्ण बातकेँ बादमे सुरक्षित नहि राखि पबैत छी। तेँ जे बात हुनका सभक दृष्टिमे महत्वपूर्ण बुझयलन्हि, ओहि बातकेँ भविष्यमे सुरक्षित रहय, ई विचारि कलमबद्ध करय लगलाह। बादमे जखन ओहि रचनाक अध्ययन करल गेल त स्वरुपगत भिन्नता देखबामे अयलन्हि। तखन अध्ययन दृष्टिसँ स्वरूपक आधारपर ओकर वर्गीकरण करल गेल जकरा मुख्यतः दू भागमे राखल गेल- 1. गद्य आ 2. पद्य। जखन कोनो रचनामे दुनूक मिश्रित रूप देखबामे अयलनि तखन ओहि रचनाक नाम 'चम्पू' रखलन्हि मुदा तखनो अध्ययन करबामे असुविधाकेँ देखैत एकर आंतरिक रुपपर विचार करैत एकरो सभक भेदोपभेद करलाह जाहिमे गद्यक भेद करलाह- कथा, उपन्यास, निबंध, नाटक आदि।

मैथिली साहित्यमे कथाक सूत्रपात भेल छल संस्कृतक पोथी विदयापतिक 'पुरुष-परिक्षा'क अनुवादसँ। एहि पोथीक अनुवाद करने छलाह- कवीश्वर चंदा झा। हिनक समकालीन रचनाकार लोकनि देखलनि जे एहि क्षेत्रमे अखन काज शुरुए भेल अछि आ हुनका लोकनिक समक्ष काजक उदाहरण छल अर्थात एक टा साहित्यिक नव बाट देखलनि आ ओहि बाटपर चलब शुरू क देलाह। एकर परिणाम भेल जे संस्कृतक अतिरिक्त आनो-आनो भाषासँ मैथिलीमे अनुवाद आबय लागल जाहिमे "अंग्रेजीसँ इसोपक नीतिकथा (दुइगोट), शेक्सपियरक 'टेम्पेस्ट'क 'कमला', गोल्ड स्मिथक 'बेकफिल्ड पादरी' ओ जानशनक 'राजकुमार रसेलस' आदिक अनुवाद कएल रमानन्द

ठाकुर, वैद्यनाथ चौधरी, डा. उमेशमिश्र, दीनानाथझा प्रभृति। तहिना बंगलासँ अनुदित भेल शिवनन्दन चौधरी द्वारा 'कपालकुण्डला' ओ 'मृण्मयी', काशीनाथझा द्वारा 'मायाशंकर', 'युगलांगुरीय' ओ 'राजपूतजीवन संध्या' ओ जीवछमिश्र द्वारा 'विचित्र रहस्य', छेदीझा द्वारा 'महाराष्ट्र जीवन-प्रभात' ओ 'सीतावनवास', सुमनजी द्वारा 'दर्पचूर्ण', 'निष्कृति' ओ 'युगलांगुरीय', भुवनजी द्वारा 'विषवृक्ष', श्रीव्यास जी द्वारा 'बाभनकबेटी' आदि आदि।"[1]

"1930 ई.क पूर्वक गल्पसाहित्य अछि मुख्यतः प्राचीन रीतिक- अधिकांश संस्कृतकथाक अनुवाद वा स्वतंत्र रूपेण रचित ताही प्रकारक कथा। जकरा आधुनिक रीतिक कथा कहैत छिऐक, तकरहु तत्व यत्किंचित् 1930 ई.क पूर्वक कथासभमे भेटैत अछि। वस्तुतः उपन्यासक अतिरिक्त आन जे कथासाहित्य मैथिलीमे अछि, से आधुनिक गल्पक पूर्व-रूप कहल जा सकैत अछि आओर ओहि मध्य आधुनिक गल्पक मुख्य-मुख्य गुण भेटैत अछि यथा- कुतूहलता, विविधता, अद्भूतता, रोमांटिक भावना प्रभृति। आगाँ कथामे उपदेशात्मकताक बीज बेशी स्फूट भेल तथा अधिकांश गल्पक निकटक वस्तु छल हास्याव्यंग्यमूलक लोककथा, मुख्यतः गोनूझाक हास्यकथा, जकरा श्री नगेन्द्रकुमरक पिता कुशेश्वरकुमर संकलित कएल 'गोनूविनोद'क नामसँ। वीरबलक कथा सेहो एहि शताब्दीक तीन-चारि दशक धरि बेस कहल-सुनल जाइत छल।"[2]

मैथिलीक प्रमुख कथाकारमे प्रो० हरिमोहन झा, कॉचीनाथ झा 'किरण', मनमोहन झा, उमानाथ झा, योगानंद झा, सुधांशु शेखर चौधरी, गोविन्द झा, राधाकृष्ण झा, मणिपद्म, शैलेन्द्र मोहन झा, राजमोहन झा, रमानंद रेणु आदिक नाम आदरक संग लेल जाइत अछि।

"श्री रमानन्द रेणुक प्रवेश मैथिली साहित्यमे गीतकारक रूपमे भेलनि तखन ई आधुनिक कविताक निर्माण कर' लगलाह, फेर कथा विधामे धुरझार लिखय लगलाह आ उपन्यास लिखिक' ओहू विधामे अपनाकेँ स्थापित क' लेलनि। रेणु कवि, कथाकार आ उपन्यासकार- एहि सभ विधाक सशक्त रचनाकार छथि। एहि तीनू विधामे हिनक कृति प्रकाशित छनि, प्रशंसित भेल छनि। हिनक कृतिसभ हिनक बहुमुखी प्रतिभाक द्योतन करबामे सर्वथा समर्थ प्रमाणित भेल अछि। विभिन्न विधाक हिनका कृतिक नामावली एहि रुपक अछि- दूध-फूल (1967)- उपन्यास; कचोट (1969), त्रिकोण (1974), अन्तहीन आकाश (1982) - कथा-संग्रह; अन्ततः (1969), ओकरे नाम (1972) - कविता।

हिनक पूर्ण नाम थिकनि रमानन्द लालदास, जन्म भेल छनि 3 जनवरी 1934केँ दरभंगा जिलाक उसमामठ नामक गागमे। टेलीफोन एक्सचेंज, दरभंगामे कार्यरत छथि। हिन्दीमे एम० ए० छछि तथा मैथिली साहित्यक वहुविध सेवामे लागल रहैत छथि।"[3]

रमानंद रेणुक पहिल कृति अछि- 'दूध-फूल' उपन्यास। ई उपन्यास तेइस खंडमे अछि।

हिनक दोसर कृति अछि- 'कचोट' कथा संग्रह जाहिमे बारह गोट कथा संग्रहित अछि। एहि बारह गोट कथामे 'कचोट' आ 'सन्नुक' बहुचर्चित कथा अछि आ 'जोंक', 'रंग, रेख आ रूप', 'करमीक फूल आ कनैलक बीया', 'एक चुरू नोर आ टघार' चर्चित कथा अछि।

रमानंद रेणुक तेसर कृति अछि- अंततः कविता संग्रह जाहिमे नवीन शिल्प-शैलीक 45 गोट कविता अछि।

रमानंद रेणुक चारिम कृति अछि- ओकरे नाम (शोक काव्य)। ई दीर्घ-कविता अछि जकर निर्माण कवि अपन पुत्र कृष्ण कुमारक आकस्मिक निधनसँ करने छलाह।

रमानंद रेणुक पाँचम कृति अछि- त्रिकोण कथा संग्रह जाहिमे 18 गोट कथा संग्रहित अछि।
रमानंद रेणुक छठम कृति अछि- अन्तहीन आकाश कथा संग्रह जाहिमे 10 गोट कथा संग्रहित अछि।

रमानंद रेणुक सातम कृति अछि- समकालीन मैथिली कथाक मूल्यांकन। ई आलोचनात्मक संपादित पोथी थिक।

रमानंद रेणुक आठम कृति अछि- मालिकाना (उपन्यास)। ई उपन्यास पुस्तकाकार नहि आयल मुदा कर्णामृतक शारदीय अंक 1991 ई0मे प्रकाशित भेल छल।

रमानंद रेणुक नवम कृति अछि- मैथिलीक समकालीन उपन्यास। ई संपादित आलोचनाक पोथी अछि।

रमानंद रेणुक दसम कृति अछि- कतेक रास बात (कविता संग्रह)। एहि पोथीमे 35 गोट कविता संग्रहित अछि। एहि कृतिपर वर्ष 2000 ई0क साहित्य अकादेमी, दिल्लीक पुरस्कार भेटल छलनि।
रमानंद रेणुक एगारहम कृति अछि- उत्तर जनपद (उपन्यास)। ई उपन्यास उतरांचलक जन-जीवनसँ अनुप्राणित अछि।

रमानंद रेणुक बारहम कृति अछि- कालजयी (उपन्यास)। ई उपन्यास पोथीक रूपेँ पाठकक सोझा 2013 ई0मे आयल मुदा कर्णामृतक विभिन्न अंकमे पहिनहि प्रकाशित भेल छल।
रमानंद रेणुक तेरहम कृति अछि- अनन्या (उपन्यास)। ई विद्यापति सेवा संस्थान, दरभंगा द्वारा प्रकाशित अछि।
रमानंद रेणुक चउदहम कृति अछि- इत्यादि (लघु उपन्यास)। ई अप्रकाशित अछि।
रमानंद रेणुक पंद्रहम कृति अछि- पुनश्च कविता संग्रह। ई पोथीक रूपेँ पाठकक सोझा 2008 ई0मे आयल।

रमानंद रेणुकेँ विभिन्न संस्थानसँ पुरस्कार आ सम्मान भेटल छनि। ओ पुरस्कार आ सम्मान अछि-

1. "मैथिली साहित्य संस्थान, पटना-1972
2. फणीश्वरनाथ स्मृति पुंज, फारबिसगंज-1993
3. मैथिली सांस्कृतिक संगम, इलाहाबाद-1998
4. चेतना समिति, पटना द्वारा ताम्रपत्र-1999
5. साहित्य अकादमी, नई दिल्ली द्वारा अकादमी पुरस्कार-2000
6. नागरिक अभिनंदन, दरभंगा- 2000
7. मैथिली शिक्षक संगोष्ठी, मुजफ्फरपुर- 2001
8. मिथिलांचल विकास परिषद, लहेरियासराय- 2001
9. यूथ फोरम, लहेरियासराय- 2001
10. कर्ण कल्याण परिषद्, समस्तीपुर- 2001
11. साक्षर (दरभंगा) एवं अखिल भारतीय साहित्य परिषद्, कबिलपुर, लहेरियासराय- 2001
12. चेतना समिति, पटना-2001
13. बिहार पेंशनर समाज, दरभंगा- 2001
14. चित्रगुप्त सभा, दरभंगा- 2002
15. अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन, चेन्नई द्वारा 'मिथिला रत्न' उपाधि- 2008।"[4]

रमानंद रेणु ओ हुनक साहित्य मैथिली साहित्यक भरण-पोषण करलक अछि। हिनक कृतिसँ मैथिली साहित्य समृद्ध भेल अछि। ई मैथिली साहित्य-जगतमे एक टा सशक्त प्रतिनिधि साहित्यकार छलाह।

"1966-67मे उपन्यास-साहित्यक नव उपलब्धि लए प्रकाशित भेल श्रीरमानन्दलाल 'रेणु'क 'दूधफूल'। एहि उपन्यासमे उपन्यासकार ग्राम्यजीवनक यथार्थ चित्र तँ अंकित करबे कएने छथि, जाहि मध्य जीवनक सूक्ष्म निरीक्षण ओ गम्भीर अन्तर्दृष्टि अछि, मुदा एकर महत्व मैथिलीमे नवरीतिक उपन्यासक दृष्टिएँ अधिक अछि। बाल्यावस्थासँ जीवनक मध्याह्न धरि एकर नायक रामसरन नियति द्वारा निर्दिष्ट जीवनप्रवाहमे बहैत रहैत अछि तथा भिन्न-भिन्न परिस्थिति भोगैत रहैत अछि। रेणुजी नायकक चरित्रांकन भिन्न-भिन्न परिस्थितिमे ओकरा राखि कएने छथि जे संयोगात्मक ओ आदर्शात्मक भेल अछि। रामसरनक बाबाजी होएबाक आ गाम घुरबाक प्रसंग बड़ नाटकीय भेल अछि। एहि कृतिक प्रमुख गुण थिक उपन्यासक निविष्ट घटना ओ ओहिसँ सम्बद्ध व्यक्ति वा परिस्थितिक सांगोपांग वर्णनः स्थान-स्थान पर मनोविश्लेषण सेहो बड मार्मिक रुपे उपनिबद्ध अछि। उपन्यासमे आद्यन्त 'सस्पेन्स' ओ रोचकता अनुवर्तमान अछि। वस्तुतः 'दूधफूल' मैथिली उपन्यास साहित्यमे एक नवीन दिशाकेँ इंगित करैत प्रतीत होइत अछि।"[5]

हिनक कथाक मूल विशेषताक प्रसंग मैथिली अकादमी द्वारा प्रकाशित कथा संग्रहमे कहल गेल अछि- "मिथिलाक निठट्ठ देहातसँ निम्नमध्यवर्गीय पात्र ल' ओकरे भाषामे, ओकर कथा कहब हिनका प्रिय छनि। पाखंड, जातिवाद, शोषण, गरीब आ सामाजिक रूढिमे पिसाइत जनसाधारणक पीड़ाकेँ अभिव्यक्ति देब हिनक कथाक उद्देश्य रहैत अछि। मोहभंग आ अनिर्णयक वातावरणमे बाट तकबाक अकुलाहटिमे जिबैत हिनक पात्र निम्नमध्यवर्गक प्रतीक जकाँ बनि गेल अछि।"[6]

हिनक कथा सभ अछि- "अँय विक्ख, अग्निजीवी, अग्निब्यूह, अनचिन्हार विड़हो: अनभुआर काग, अन्तरगाथा, अन्तहीन आकाश, असमंजस, आगि!!, आतंक निवारण, उग्रास, उदास एक क्षण, उधबा उधिआइत गाम, उपसर्ग, एक-एक बात, एक चुरू नोर आ टधार, एकटा आर आकाश, एकटा आर हत्या, एकौँस नाहक बोझ, ओकर कानब, कचोट, कठघरा, करमीक फूल: कनैलक बीया, कहिया धरि, काँट, कीड़ा, कीर्तन, कोकनल गाछ, गाम सुनगि गेल, गिद्ध, गुलाम हाजिर, गौंआ, घट्ठर, घर कूही सन, छल, छोट-छोट पैघ बात, जानवर, जाल, जोंक, दुगरक जन्म, डकिनियाँ, ढाठ, तैयो, त्रिकोण, दरार फाटि गेल, दृष्टान्त, दोस्ती नहि, धुआँक धारी, परिक्रमा, पात्र परिचय, पुजारी जी, बदलैत नक्शाक बिन्दु, भरसाहा, मुँहपुरुष, मोना, युद्ध रङ रेख आ रूप, लल्ल, लहास बजै छै, लाक्षागृह, वंशधर, विवादास्पद, शवयात्रा, सजाय, सटका खोच आ विस्वाद जिनगी, सन्दूक, सूर्यग्रहण, स्वीकृत-अस्वीकृत, हाकिमनामा।"[7]

डा0 मेघन प्रसादक अनुसारेँ जाहि कथापर एक टा * अछि ओ कथा चर्चित आ जाहि कथापर दू टा * अछि ओ कथा वहुचर्चित अछि।

संदर्भ संकेत

1. श्रीश, डॉ. दुर्गानाथ झा: 1991, मैथिली साहित्यक इतिहास, प्रकाशक - भारती पुस्तक केन्द्र, टावर चौक, दरभंगा, पृष्ठ सं०- 337, 398
2. उपरोक्त पृष्ठ सं०-377
3. झा, डॉ० भीमनाथ, 1985, परिचारिका, प्रकाशक - भवानी प्रकाशन, पटना, पृष्ठ सं०-180
4. रेणु, रमानंद: 2013, कालजयी, कर्णगोष्ठी, कोलकाता, पृष्ठ सं०- अंतिम आवरण पृष्ठ
5. श्रीश, डॉ. दुर्गानाथ झा: 1991, मैथिली साहित्यक इतिहास, प्रकाशक - भारती पुस्तक केन्द्र, टावर चौक, दरभंगा, पृष्ठ सं०-
6. सं.- पाठक, डॉ. अमरेश: भारद्वाज मोहन, 2007, कथा-संग्रह, प्रकाशक- मैथिली अकादमी पटना, पृष्ठ सं०- 7,8
7. प्रसाद, डॉ. मेधन: 1996, मैथिली कथा कोश, प्रकाशक - पूनम प्रकाशन, सिंधिया घाट, समस्तीपुर पृष्ठ सं०- 247